Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

संस्कृत भाषा का भाषिक वैविध्य

Dr. Anita Sharma*

Associate Professor, Laxmibai University, (Delhi University) Ashok Vihar, Delhi-110052

सारांश – *भाषाशास्त्री दो प्रकार की वाक् स्वीकार करते हैं- दैवी और मानुषी। इनमें दैवी वाक् मन्त्रमयी तथा द्वितीय मानुषी वाक् मनुष्यों में व्यवहृत वाक् कहलाती है। मानुषी वाक् में प्रायः दैवी वाक् के ही पद-वाक्य आदि से निबद्ध संरचना का ग्रहण होता है। जो मात्र आनुपूर्वी के हेर-फेर के कारण एक नया रूप धारण करती है। जिसका मूल दैवी वाक् ही है। इसीलिये आचार्यदण्डी ने पहली बार सोद्घोष दैवी वाक् को संस्कृत नाम से अभिहित किया है।[1] संस्कृत नामक दैवी वाक् ने परवर्ती काल में पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि रूपों को भी धारण किया। भाषाशास्त्रियों ने संस्कृत से उद्भूत प्राकृत के प्रमुख पांच भेद माहाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी अर्धमागधी और पैशाची स्वीकार किये हैं। किन्तु प्रायः दशम शताब्दी में अन्य भाषाओं का भी अस्तित्व दृष्टिगोचर होने लगा था जिनमें गुजराती, मराठी, सिन्धी, पंजाबी, राजस्थानी, सिन्धी, हिन्दी, नेपाली, डोंगरी, मैथिली, बंगला, उड़िया और असमिया आदि नव्यभाषाएं हैं। इस प्रकार संस्कृत से विकसित और समृद्ध समस्त भारतीय भाषाओं को आर्यभाषा कहा जाने लगा। संस्कृत के कारण भाषाशास्त्रियों ने भारतीय भाषाओं का सम्बन्ध ईरानी और यूरोपीय भाषाओं से माना जाने लगा। अत एव संस्कृत के भाषिक वैविध्य को ध्यान में रखकर ही सर विलियम जोन्स को ग्रीक और लातिन भाषाओं के साथ तुलना करने के लिये बलात् सन्नद्ध और उत्साहित होना पड़ा। मातृभाषा संस्कृत के उक्त भाषिक वैविध्य को देखते हुए प्रकृत लेख में संस्कृत का उत्तर भारत, हिमाचल प्रदेश की कांगड़ी एवं किन्नौरी भाषाओं के साथ अन्तःसम्बन्ध को उपस्थापित किया गया है।*

----------X----------

मनुष्यों द्वारा ध्वनि संकेतों की सहायता से किए जाने वाले विचार-विनियम के माध्यम को भाषा कहा जाता है। ऋग्वेद के अनुसार वाग्देवी अर्थात् भाषा को देवों ने उत्पन्न किया और सभी प्राणी उसे बोलते हैं-

देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।[1]

माहेश्वर सूत्र शिव प्रदत्त हैं-

नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।

इस प्रकार की देववाणी 'संस्कृत' देवभूमि हिमाचल प्रदेश में बहुविध रूपों में प्रतिष्ठित है। प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं- वैदिक एवं लौकिक संस्कृत से मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएं पालि, प्राकृत एवं अपभ्रश एवं इसी अपभ्रंश से शौरसेनी, पैशाची एवं खस भाषाएं विकसित हुई। इन त्रिविध अपभ्रंश भाषाओं से हिमाचल का भाषा परिवार बना, जो है- **कषाणी, कहलूरी अथवा विलासपुरी, कांगडी, किन्नौरी, कुल्लुई, गादी-पहाड़ी, गुज्जर, चम्बयाली, चिनलभाषे, चुराही, तिनन, स्तोदपा, पट्टनी, पांगी, पुनन, बघाटी, बागली, भोटी, मण्डयाली, महासुई, लोहारी अथवा (लाहुल), सराज़ी, सिरमौरी एवं स्पिति।**

डॉ० ग्रियर्सन एवं डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी हिमाचली भाषाओं को पैशाची पर आधारित एवं डॉ० धीरेन्द्र वर्मा आदि विद्वानों ने शौरसेनी से हिमाचली भाषाओं का सम्बन्ध माना है।[2] हिमाचल प्रदेश के तीन जिलों किन्नौर, लाहौल-स्पिति एवं चम्बा के लाहुल क्षेत्र की भाषाएं तिब्बति-वर्मी भाषा परिवार से भी सम्बन्धित मानी जाती हैं।

1. संस्कृत एवं कांगड़ी

'कांगड़ी' कांगडा जनपद की प्राचीन भाषा है। इसे पहाड़ी भी कहा जाता है। कांगडी पहाड़ी भी इस भाषा का नाम है। 1966 में कांगड़ा का हिमाचल में जब विलय हुआ तो यहीं 'हिमाचली-कांगड़ी' या 'कांगडी-हिमाचली भी कहलाने लगी।

कांगड़ा गजेटीयर में कहा गया है कि 'जब हमारे पूर्वज असभ्य एवं निरक्षर थे और रोमन साम्राज्य अपनी प्रारम्भिक अवस्था में था, तब कांगड़ा में एक व्यस्थित शासन के साथ, कटोच साम्राज्य था।[3]

कटोच वंश जिस 'त्रिगर्त' राज्य पर शासन करता था, 'कांगड़ा' उसकी राजधानी था। प्रशासकीय दस्तावेजों में

www.ignited.in

कांगड़ी ठक्करी या टांकरी लिपि में बद्ध मिलती है जबकि लोक वाणी के रूप में कांगड़ी आज देवनागरी लिपि में लोक गीतों गीतियों, कथाओं, कहावतों, नाटकों, लोकाचारों, संस्कारों आदि में पल्लवित पुष्पित हो रही है। वर्तमान में हिमाचल प्रदेश में कांगड़ी भाषा का प्रचलन कांगड़ा हमीरपुर एवं ऊना जिलों के कुछ भागों में है।

कांगड़ी की स्वर एवं व्यञ्जन सम्पत्ति संस्कृत की देन है-

1. **स्वर-** अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ ओ, औ, अं, अः

इनमें अ, इ, उ, ह्रस्व एवं आ, ई, ऊ, ए, ऐ दीर्घ स्वरों के रूप में प्रयुक्त होते हैं। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ यौगिक एवं अं आं, इं, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओं तथा औं अनुनासिक स्वरों के रूप में कांगड़ी भाषा में प्रयुक्त होते हैं।

2. **व्यञ्जन-** क, ख, ग, घ, द, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ

स्पर्श व्यञ्जन- च, छ, ज, झ स्पर्श संघर्षी एवं स, ष, श, ह संघर्षी व्यञ्जन कांगड़ी में संस्कृत से ही ग्रहण किए गए है।

3. **अनुस्वार**- संस्कृत का 'कंकण' कांगड़ी में 'कंगण' उसी अर्थ में रहता है और विवाह सूत्र के अर्थ में 'कंगणा' रूप में प्रयुक्त होता है।

4. **विसर्ग-** कांगड़ी भाषा के अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम है-'ओह' अथवा सैः (वह) सैः को 'सैह' के रूप में लिखा जाता है।

5. **ऋ स्वर-** संस्कृत का 'ऋ' कांगड़ी में 'र' में परिवर्तित हो जाता है प्रायशः।

यथा -

संस्कृत		कांगड़ी
कृपा	>	किरपा
ऋषि	>	रिषी
ऋक्ष	>	रिच्छ
ऋतु	>	रूत
वृक्ष	>	रूक्ख

इन सभी के अर्थ भी संस्कृत तुल्य हैं।

6. **व्यञ्जन गुच्छ–** कांगड़ी में व्यञ्जन गुच्छ प्रयांग भी उपलब्ध होता है जो संस्कृताधारित भी है यथा-

पक्ष के लिए कांगड़ी का पच्छ (प् + अ + च् + छ् + अ)

7. **व्यञ्जन द्वित्व-** संस्कृत कांगड़ी

कर्ण > क् + अ + न् + न् + अ कन्न

यहाँ संस्कृत एवं कांगड़ी में अर्थ समान है।

8. **ल ध्वनि को ल़** - संस्कृत की 'ल' ध्वनि कांगड़ी में 'ल़ ' के रूप में भी प्रयुक्त होती है और ल़ के रूप में भी जैसे संस्कृत का 'लवण' 'लूण' हो जाता है और हिन्दी का फल फल़। संस्कृत ध्वनि में यह परिवर्तन कांगड़ी पर उर्दू-फ़ारसी के प्रभाववश दृष्टिगोचर होता है। संस्कृत का 'कुलज' कांगड़ी में 'कुल़ज' उच्चारित होता है।

विभक्ति रूप- कांगड़ी में संस्कृत के समान ही विभक्ति संरचना है। 'वचन दो है'- एकवचन तथा बहुवचन।

संख्या वाचक- कांगड़ी की संख्या विषयक संस्कृताधारिता इस प्रकार स्पष्ट है-

संस्कृत		कांगड़ी
एकः	>	इक
द्विः	>	दो
त्रिः	>	तीन
चतुर्	>	चार
पञ्चन्	>	पञ्ज
षष्	>	छे
सप्तन्	>	सत
अष्टन्	>	अट्ठ
नवन्	>	नो
दशन्	>	दस्स

उपर्युक्त विवरण से कांगड़ी भाषा का संस्कृत से सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है। अब कतिपय अन्य उदाहरणों द्वारा संस्कृत भाषा का कांगड़ी भाषा से अन्तः सम्बन्ध प्रस्तुत है-

1. **मीनकी-** यह शब्द संस्कृत से स्थानीय कांगड़ी भाषा तक की यात्रा कर यथावत् अर्थ को सुरक्षित रखने वाले शब्दों की श्रृंखला का एक रोचक उदाहरण है।

संस्कृत में 'ब्राह्मी' के लिए प्रयुक्त शब्द है 'मण्डूकपर्णी' कांगड़ी में ब्राह्मी को 'मीनकी' कहा जाता है जिसका अर्थ है 'मेंढकी'। पत्राकृति के कारण ब्राह्मी संस्कृत में 'मण्डूकपर्णी' है तो कांगड़ी में भी 'मीनकी' रही।

2. **गण्डु-** आद्यक्षरों का लोप हो संस्कृत का 'प्लाण्डु' 'गण्डु' के रूप में कांगड़ी में समानार्थ में अवशिष्ट रहा, प्याज़ अर्थ में।

3. **तीरथ-** कांगड़ी भाषा में 'श्मशान, के लिए प्रयुक्त होता है। संस्कृत में 'तीर्थ' शब्द पितरों से भी सम्बद्ध है। कांगड़ी में यह शब्द पितरों से भी सम्बद्ध हो जाता है एवं 'तृ' (पार करना) का अर्थ संवहन कर इस लोक से पार कर प्राणी को परलोक में ले जाने वाले स्थान विशेष के अर्थ का भी द्योतक हो जाता है।

4. **करण्डी-** करण्ड से ङीष् हो संस्कृत में करण्डी शब्द बाँस की टोकरी के अर्थ में प्रयुक्त होता है। कांगडी भाषा में 'करण्डी' शब्द स्त्रीलिंग में ही यथारूप एवं यथावत् अर्थ में प्रयुक्त होता हैं।

5. **कुल्ल-** संस्कृत में प्रयुक्त 'कुल्या' कांगड़ी में कुल्ल हो जाता है। अर्थ संस्कृतवत् ही रहा है- छोटी नदी या नहर। इसी प्रकार -

संस्कृत		कांगड़ी	अर्थ
यक्ष	>	जख	यक्ष
यक्षिणी	>	जखणी	यक्षिणी
मोक्ष	>	मोख	मोक्ष
भाण्डम्	>	भाण्डे	बर्तन
एला	>	एलदाणा	इलायची
द्रोण	>	द्रुण	एक माप-तौल
द्राक्षा	>	दाख	मुनक्का
दूर्वा	>	दूब	दूब
काक	>	का	कौआ
ग्राम	>	गां	गाँव
दृति	>	ढेई	संस्कृत-मशक कांगड़ी-मशक से नदी पार कराने वाला।

इस प्रकार संस्कृत से सम्बद्ध विपुल शब्द सम्पदा एवं व्याकरण के नियम कांगड़ी भाषा अपने में समाहित किए हुए संस्कृत के साथ अपने सम्बन्ध को उद्घोषित करती है।

2. संस्कृत एवं किन्नौरी

हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले में बोली जाने वाली भाषाओं को 'किन्नौरी' कहा जाता है। यह भाषा निचार, कल्पा एवं पूह के क्षेत्रों में प्रसारित है। किन्नौरी की अपनी कोई लिपि नहीं है। मुण्डा, किरात तथा भोटी भाषाओं के साथ-साथ आर्य भाषाओं के पर्याप्त शब्द इसमें मिलते हैं।

विश्व का सर्वाधिक प्राचीनतम उपलब्ध-सहित्य ऋग्वेद आर्य भाषा संस्कृत में निबद्ध है। अनेक विद्वानों के मतानुसार वैदिक ऋचाओं के मुख्य भाग की रचना भारत के उत्तर पश्चिम में हुई। भारत के इसी भू-भाग में यह वर्तमान पहाड़ी क्षेत्र पड़ता है। वैदिक संस्कृत का प्रभाव कांगड़ी पर भी पड़ा और किन्नौरी पर भी। वैदिक 'जबरा' शब्द कांगड़ी में आज भी ज्यों का त्यों प्रयुक्त होता है और दोनों में समानार्थक है- वृद्ध। इसी प्रकार वैदिक स्वाराघात एवं ध्वनियां किन्नौरी में प्रयुक्त होती है। संस्कृत की ही भाँति इसमें तीन वचन हैं।

स्वर- किन्नौरी की स्वर ध्वनियाँ कांगड़ी की ही भाँति संस्कृत की देन है। किन्नौरी में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ तथा अनुस्वार का प्रयोग होता है। कांगडी की भाँति विसर्ग का किन्नौरी में प्रयोग नहीं है और 'ऋ' का प्रयोग भी इसमें नहीं मिलता।

व्यञ्जन- क, ख, ग, घ, च, छ, छ, ज, ट, ठ, ड, त, थ, द, ध, प एवं फ संस्कृत वर्णमाला के व्यञ्जनों का यथारूप प्रयोग किन्नौरी में हुआ है।

ण, ङ, ञ, न और म अनुनासिक व्यञ्जनों के प्रयोग में संस्कृत से किन्नौरी भिन्न है। किन्नौरी में ण के स्थान पर ङ् व्यञ्जन का प्रयोग होता है। शब्दान्त में इस व्यञ्जन का प्रयोग होता है। शब्दान्त में इस व्यञ्जन का सर्वाधिक प्रयोग किन्नौरी में हुआ है, उसी प्रकार से जिस प्रकार से संस्कृत में शब्दान्त म का प्रयोग। स, द, व, र एवं ल व्यञ्जनों को भी किन्नौरी ने यथावत्, संस्कृत से ग्रहण किया है।

स्वर- व्यंजनों के अतिरिक्त **किन्नौरी में संस्कृत की भाँति तीन वचनों का प्रयोग होता है** जबकि कांगड़ी में दो ही वचन हैं। निम्न शब्द रूप से संस्कृत एवं किन्नौरी की कारक एवं विभक्ति विषयक साम्यता एवं वैषम्य को समझा जा सकता है –

किन्नौरी-रङ् (घोड़ा)[4]

विभक्ति/कारक	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा-कर्ता	रडीस	निष रङास	रङास
द्वितीया-कर्म	रङ्ऊ	निष राङान	रङानु
तृतीया-करण	रङ्ऊ दङ्च	निष रङ् दङ्च	रङानु दङ्च
चतुर्थी-सम्प्रदान	रङऊ ताङेस	निष रङानु ताङेस	रङानु ताङेस
पञ्चमी अपादान	रङ् दङ्च	निष रङानु दङ्च	रङानु दङ्च
षष्ठी-सम्बन्ध	रङ्ऊ	निष रङानु	रङानु
अधिकरण-सप्तमी	रङ् देन	निष रङानु देन	रङानु देन

शब्द रूप के आधार पर स्पष्ट ही है कि किन्नौरी के शब्दरूप संस्कृत की भाँति श्लिष्टयोगात्मक नहीं हैं। तीन वचनों में होते हुए भी किन्नौरी रूप संस्कृत से नितान्त भिन्न हैं।

संस्कृत की भाँति किन्नौरी का **संख्या वाचक शब्दों** का गणना क्रम दस-दस का ही है परन्तु वे संस्कृत की उपेक्षा भोटी के अधिक समीप हैं।

किन्नौरी **क्रिया रूपों** में त्वम्, युवाम्, यूयम् की भाँति शब्द प्रयुक्त होते है। संस्कृत के त्वम् अगच्छः युवाम् अगच्छतम्, यूयम् अगच्छत के समान किन्नौरी में का बयो किन (तू गया), किषि ब्यो किच् (आप दो गए), किना ब्यो केंई (आप सब गए) रूप मिलते हैं।

किन्नौरी में संस्कृत की भाँति लिंग-भेद के अनुरूप तिङन्त भेद नहीं आता। संस्कृत में बालक: पठति, बालिका पठति में कर्ता के अनुसार तिङ् प्रत्ययों में जैसे भेद नहीं आता वैसे ही किन्नौरी में आमा हुषिद (माता पढती है) तथा तौवा हुषिद (पिता पढता है) रूप मिलते हैं। यहाँ भी कर्ता के लिङ्ग के अनुसार संस्कृतवत् क्रियारूप में कोई परिवर्तन नहीं होता। कतिपय अन्य पहाड़ी बोलियों में भी यह विशेषता मिलती है किन्तु वहाँ वर्तमान काल में स्त्रीलिंग और पुल्लिंग कर्ता के लिंग के अनुसार क्रिया रूप नहीं बदलता अपितु समान रहता है जबकि किन्नौरी के तीनों कालो में कर्ता के लिंग भेद के अनुसार कोई रूप परिवर्तित नहीं होता जैसे-

वर्तमान : छङ यक्च दू (वच्चा सोता है)

चिमेद यक्च दू (लड़की सोती है)

भूतकाल : छङ् यग-यग दुए (लड़का सोया था)

चिमेद यग-यग दुए (लड़की सोयी थी।

भविष्यकाल: छङ यग-यग नीतो (लड़का सोया होगा)

चिमेद यग-यग नीतो (लड़की सोई होगी)[5]

कतिपय विद्वान् किन्नौरी को मुण्डा भाषाओं का अंश मानते हैं परन्तु टाशी नेगी एवं हरविन्दर नेगी जैसे विद्वान् मानते है कि किन्नौरी पूर्णतः मुण्डा वर्ग की भाषा नहीं है अपितु संस्कृत भाषा जैसी पुरातन भाषाओं के शब्दों की भी इस भाषा में प्रचुरता है। उदाहरणार्थ किन्नौरी के कुछ ऐसे शब्द है जो संस्कृत के इतने समीप हैं कि उन्हें हम संस्कृत से उत्पन्न मानने में संदेह नहीं कर सकते जैसे -

संस्कृत		किन्नौरी
मा	>	मा/मानि (संशय)
रिख्	>	रिखा (भालु)
नी	>	फीं (ले जाओ)
स्वर्ग	>	सोरगङ् (स्वर्ग)
दिव	>	दिवु सडङ् (दिवस)
मातुल	>	मौमा (मामा)[6]

इस प्रकार कालान्तर में किन्नौरी पर भले ही भोटी तथा किरात भाषा का प्रभव पड़ा हो परन्तु संस्कृत से उसका अन्तः सम्बन्ध ऐसा है कि आज भी यह भाषा संस्कृत के नियमों को अपने भीतर सतत संजोए हुए है। संस्कृत के समान-द्विवचन का प्रयोग ही अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं की अपेक्षा किन्नौरी को संस्कृत से अधिक समीप्य प्रदान करता है।

अनेक संस्कृत के शब्द किन्नौरी एवं कांगड़ी जैसी हिमाचल प्रदेश में प्रचलित भाषाओं में प्रयोग के आधार पर सिद्ध करते हैं कि कहीं न कहीं इनकी जननी भी संस्कृत है। ये पहाड़ी भाषाएँ भी संस्कृत वटवृक्ष की ही शांखाएँ हैं जो आज भी संस्कृत को स्वयं में समाहित कर पल्लवित, पुष्पित हो रही है –

संस्कृत	किन्नौरी	कांगडी	हिन्दी
विद्युत	>बिजुल	>बिजली	>बिजली
भगवान	>भोगान	>भगवान	>भगवान
पूजा	>पजा	>पूजा	>पूजा
वन	>-	>बण	>जंगल
धन	>-	>धण	>धन
घरट्ट	>-	>घराट	>पनचक्की
भूमि	>-	>भू	>भूमि

इस प्रकार की विपुल संस्कृत शब्द-सम्पदा से ये दोनों पहाड़ी भाषाएं अलंकृत है।

संदर्भ सङ्केत

1. ऋग्वेद, 8.100.11
2. हिमाचल प्रदेश की भाषाएं, गणेश एन. देवी, ओरियंट ब्लैक स्वान, 2015 पृ-7, 8
3. कांगडा गेजटियर भाग-1, पृष्ठ 39, 1904

4. हिमाचल प्रदेश की भाषाएँ गणेश एन. देवी, ओरियन्ट ब्लैक स्वान, 2015, पृ॰ 8

5. वही, पृष्ठ 83

6. वही, पृष्ठ 77

Corresponding Author

Dr. Anita Sharma*

Associate Professor, Laxmibai University, (Delhi University) Ashok Vihar, Delhi-110052

anitasharma12345@yahoo.com